श्रीजिनेन्द्रायनमः

(न्यामत सिंह रचित जैन ग्रंथ माला-अंक ३)

मूर्ति मंडन प्रकाश

(अर्थात्)

जैन भजन पुष्पांजली

(प्रथम भाग-मूर्ति मंडन निर्णय)

१

चाल—कहां लेजाऊं दिल दोनो जहां में इसकी मुशकिल है ॥

श्री जिनराजकी तसवीरका कुछ ध्यान पैदा कर ॥
दिले पुर दर्द में वैरागका सामान पैदा कर ॥ १ ॥
जरा करके दरश जिनराजकी तू शान्त मूरतका ॥
तमन्ना जिसकी मुदत्तसे है वह निर्वाण पैदा कर ॥ २ ॥
भटकता किस लिये फिरता है क्यों इतना परीशां है ॥
अगर कुछ काम करना है तो बस औसान पैदा कर ॥ ३ ॥
छोड़दे सब ग़लत मसले मसायल ज्ञान पैदा कर ॥
श्री अरिहंतकी बातों का तू ईमान पैदा कर ॥ ४ ॥
न समझा मैं को तूने ग़ैर को समझा हुवाहै मैं ॥